

वजियनगर साम्राज्य के ताम्रपत्र की खोज

प्रलिम्स के लयि:

[वजियनगर साम्राज्य](#), [भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण \(ASI\)](#), [राजा कृष्णदेवराय](#), [हम्पी](#), [युनेसको द्वारा वशिव धरोहर सथल](#), [हज़ारा राम मंदिर](#), [उग्र नरसहि परतमि](#)

मेन्स के लयि:

वजियनगर साम्राज्य के दौरान सांस्कृतिक और साहित्यिक विकास, कृष्णदेवराय का साहित्यिक योगदान।

[स्रोत: द हट्टि](#)

चर्चा में क्यों?

हाल ही में, तमलिनाडु के त्रिवल्लूर ज़िले के मप्पेडु गाँव स्थिति श्री सगिश्वर मंदिर में 16वीं शताब्दी के दो पृष्ठों वाले ताम्रपत्र अभलिख के एक समूह की खोज की गई है।

- तांबे की प्लेटों के दो पृष्ठों/पत्तों को एक अंगूठी की सहायता से आपस में परीया गया है जसि पर [वजियनगर साम्राज्य](#) की मुहर बनी हुई है।
- चंद्रगरी के राजा द्वारा ब्राह्मणों को एक गाँव दान में देने का उल्लेख करने वाला अभलिखसंस्कृत और नंदीनगरी लिपि में लिखा गया है। इसे [राजा कृष्णदेवराय](#) के शासनकाल के दौरान 1513 ई. में उत्कीर्ण किया गया था।



राजा कृष्णदेवराय कौन थे?

- कृष्णदेवराय का शासनकाल:
 - वजियनगर साम्राज्य पर 1509 से 1529 ई. तक कृष्णदेवराय का शासन रहा।
 - कृष्णदेव राय के बाद, 1530 ई. में अच्युत राय और उसके बाद 1542 ई. में सदा शवि राय ने शासन संभाला।
 - उन्हें वभिन्न उपाधियों से जाना जाता था, जनिमें “कन्नडराय (Kannadaraya)” और “कन्नड राज्य रामरण (Kannada

Rajya Ramaramana)” शामिल थे।

- उन्हें भारतीय इतिहास के सबसे महान राजनेताओं में से एक माना जाता है तथा उन्हें मध्यकालीन दक्षिण भारत के सबसे महत्त्वपूर्ण शासकों में से एक माना जाता है।

■ साहित्यिक योगदान:

- वह एक प्रख्यात वदिवान थे और उन्होंने मदालसा चरति, सत्यवेदु परणिय, रसमंजरी, जाम्बवती कल्याण (Jambavati Kalyana) और अमुक्तमालक्यदा (Amuktamalkyada) जैसी रचनाएँ लखीं।
- अनेक भाषाओं में नपुण होने के कारण उन्होंने संस्कृत, तेलुगु, तमिल और कन्नड़ में लिखने वाले कवियों को सहयोग दिया।

■ शिक्षा और साहित्य का संरक्षण:

- उनके दरबार में अष्टदगिगज, आठ प्रमुख वदिवान शामिल थे, उनमें अल्लासाना पिददन्ना भी शामिल थे, जिन्हें आंध्र-कवितापतिमह के नाम से जाना जाता था, जो अपने कार्य मनुचरतिमु के लिये प्रसिद्ध थे।
- कन्नड़ कवि थिमिन्ना ने कृष्णदेवराय के अनुरोध पर कन्नड़ महाभारत को पूरा किया, जो मूल रूप से कुमार व्यास द्वारा शुरू किया गया था।
- उनके शासनकाल के दौरान अन्य उल्लेखनीय कवियों को संरक्षण प्राप्त हुआ।
 - कन्नड़ कवि भल्लनारय, वीरशैवमृत और भावचतिरत्न के लेखक।
 - चतु वट्टिलनाथ, जिन्होंने भागवत लिखी।
 - तमिमन्ना कवि अपनी स्तुति कृष्णराय भरत के लिये जाने जाते हैं।
 - तेलुगु कवि पिददन्ना को तेलुगु और संस्कृत में उनकी दक्षता के लिये सम्मानित किया गया।

■ सांस्कृतिक विकास:

- कृष्णदेवराय ने करनाटक संगीत परंपरा को पोषित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- उन्होंने भरतनाट्यम और कुचपुडी सहित शास्त्रीय नृत्य शैलियों को भी प्रोत्साहित किया।

■ बुनियादी ढाँचा विकास:

- उन्हें कुछ बेहतरीन मंदिरों के निर्माण और कई महत्त्वपूर्ण दक्षिण भारतीय मंदिरों में प्रभावशाली गोपुरम जोड़ने का श्रेय दिया जाता है।
- उन्होंने वजियनगर के नजद अपनी माँ के नाम पर नागलपुरम नामक एक उपनगरीय नगर भी बसाया।

वजियनगर साम्राज्य के प्रमुख बटु क्या हैं?

■ साम्राज्य की स्थापना और अवधि:

- वजियनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 ई. से दक्कन क्षेत्र में हुई थी, जिसकी स्थापना हरहिर (जसि हकका भी कहा जाता है) और उनके भाई बुकका राय ने की थी।
 - उन्होंने हमपी को राजधानी शहर बनाया (जसि वर्ष 1986 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया)।
 - वजियनगर साम्राज्य पर चार महत्त्वपूर्ण राजवंशों (संगामा, सलुवा, तुलुवा, अरवड्डि) का शासन था।
- यह साम्राज्य 1336 ई. से लेकर लगभग 1660 ई. तक चला, हालाँकि अंतिम शताब्दी में दक्कन सल्तनतों के गठबंधन द्वारा विनाशकारी पराजय के बाद इसे धीरे-धीरे पतन का सामना करना पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप राजधानी पर कब्जा कर उसे नष्ट का दिया गया।

■ पुरतगाली संबंध:

- वर्ष 1510 के आसपास पुरतगालियों ने वजियनगर के सहयोग से बीजापुर के सुल्तान के अधीन गोवा पर कब्जा कर लिया।
- पुरतगालियों ने वजियनगर साम्राज्य को बंदूकें और अरबी घोड़े उपलब्ध कराए, जबकि किपास, चावल, चीनी, मसाले, नील और लकड़ी के सामान निर्यात किया गया।

■ सांस्कृतिक एवं स्थापत्य कला का उत्कर्ष:

- आमतौर पर यह माना जाता है कि कृष्णदेव राय के शासनकाल में यह साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया था, जिन्होंने दक्कन के पूरव में उन क्षेत्रों पर वजिय प्राप्त की थी जो पहले उड़ीसा का हिस्सा थे।
- साम्राज्य के कई उल्लेखनीय स्मारक, जिनमें हज़ारा राम मंदिर, कृष्ण मंदिर और उग्र नरसहि प्रतमि शामिल हैं, उनके समय के हैं।
- वजियनगर शासकों ने भव्य मंदिरों के निर्माण को बढ़ावा दिया, जैसे वरिपाकष मंदिर और वट्टिल मंदिर, जो अपनी जटिल नक्काशी और आश्चर्यजनक वास्तुकला के लिये जाने जाते हैं।

■ दक्षिणी भारत में प्रभुत्व:

- दो शताब्दियों से अधिक समय तक वजियनगर साम्राज्य ने दक्षिणी भारत पर अपना प्रभुत्व बनाए रखा और इस अवधि के दौरान यह भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे शक्तिशाली साम्राज्य था।
- यह साम्राज्य सधु-गंगा के मैदान के तुर्क सल्तनतों के आक्रमणों के विरुद्ध रक्षा के रूप में कार्य करता था।

■ दक्कन सल्तनत और मुगलों के साथ संघर्ष:

- वजियनगर साम्राज्य की स्थापना आंशिक रूप से मुहम्मद बनि तुगलक के अधीन दिल्ली सल्तनत के कमज़ोर होने की प्रतिक्रियास्वरूप की गई थी, जिसकी नीतियों के कारण दक्कन में अशांति का वातावरण था।
 - अपनी राजधानी को दिल्ली से दौलताबाद स्थानांतरित करने के उनके प्रयास और उनकी कठोर नीतियों के कारण विद्रोह हुए, जिससे वजियनगर सहित स्वतंत्र क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ।
- साम्राज्य का अक्सर बहमनी सल्तनत के साथ संघर्ष होता रहता था, जो दक्कन में तुगलक के नयितरण के पतन के बाद उभरा था।
- दक्कन सल्तनत के साथ क्षेत्रीय संघर्ष, विशेष रूप से रायचूर दोआब को लेकर, विशुद्ध धार्मिक मतभेदों के बजाय सामरिक और आर्थिक संसाधनों के लिये प्रतिसिपर्द्धा से प्रेरित थे।

■ वजियनगर के अधीन शासन का क्षेत्र:

- अपने चरम पर, साम्राज्य दक्षिणी भारत के विशाल क्षेत्र में फैला हुआ था, जिसमें वर्तमान कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल

और तेलंगाना के कुछ हिस्से शामिल थे।

- यह उत्तर में कृष्णा नदी से लेकर भारतीय प्रायद्वीप के सुदूर दक्षिणी सरि तक तथा पश्चिम में अरब सागर से लेकर पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक फैला हुआ था।
- गरिावट और पतन:
 - वर्ष 1565 में, तालीकोटा के युद्ध (रक्कसगी-तांगदागी की लड़ाई) के परिणामस्वरूप मतिर देशों की दक्कन सल्तनतों द्वारा वजियनगर सेना की नरिणायक हार हुई।

नायक

- नायक सैन्य कमांडर थे, जिन्हें सेना के रखरखाव और वतितीय योगदान के बदले में राजा द्वारा भूमि (अमरम) प्रदान की जाती थी।
- उन्हें अपने कषेत्रों में पर्याप्त स्वायत्तता प्राप्त थी, वे स्थानीय प्रशासन और रक्षा का प्रबंधन करते थे तथा केंद्रीय सत्ता के प्रतिविफादार बने रहते थे।
- नायक स्थानीय शासन के लिये ज़िम्मेदार थे, जिसमें भूमि वतिरण और कर संग्रह शामिल था तथा सामंती जैसी व्यवस्था बनी हुई थी।
- समय के साथ, कुछ नायकों ने महत्त्वपूर्ण शक्ति प्राप्त कर ली, जिसके कारण केंद्रीय प्राधिकार, के साथ वशिषकर साम्राज्य के पतन के दौरान, संघर्ष हुआ।

दृष्टिमुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न: वजियनगर साम्राज्य के दक्षिण भारत में सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक योगदान पर चर्चा कीजिये। इन योगदानों ने बाद के भारतीय इतिहास को कैसे प्रभावित किया?

यूपीएससी सविलि सेवा परीक्षा, पछिले वर्ष के प्रश्न (PYQ)

??????:

प्रसदिध वरिुपाकष मंदरि कहाँ स्थति है? (2009)

- (a) भद्राचलम
- (b) चदिंबरम
- (c) हमपी
- (d) श्री कालहस्ती

उत्तर: (c)

??????:

Q. वजियनगर के राजा कृष्णदेव राय न केवल स्वयं एक कुशल वदिवान थे, बल्कि वे शक्ति और साहित्य के महान संरक्षक भी थे। चर्चा कीजिये। (2016)